"भारत में राष्ट्र भाषा और राज्य भाषाओं के परस्पर संपर्क से उत्पन्न व्याकरणिक विसंगतियों का विश्लेषण: एक भाषावैज्ञानिक अध्ययन"

[1]शक्ति पारेख

रिसर्च स्कोलर, हिंदी विभाग मानसरोवर ग्लोबल, सीहोर, मध्य प्रदेश

[2]डॉ. दीपिका जैन

शोध मार्गदर्शिका, हिंदी विभाग, मानसरोवर ग्लोबल, सीहोर, मध्य प्रदेश

सारांश : भारत एक बहुभाषी देश है जहाँ हिंदी को संविधान द्वारा राजभाषा का दर्जा प्राप्त है और विभिन्न राज्यों की अपनी-अपनी राज्य भाषाएँ भी हैं। भाषाई विविधता के इस परिदृश्य में राष्ट्र भाषा (हिंदी) और विभिन्न राज्य भाषाओं के पारस्परिक संपर्क से कई प्रकार की व्याकरणिक विसंगतियाँ उत्पन्न होती हैं। यह शोध-पत्र राष्ट्र भाषा और राज्य भाषाओं के अंतःसंपर्क से उत्पन्न व्याकरणिक त्रुटियों की पहचान, उनके कारणों का विश्लेषण, और सुधार के उपायों पर केंद्रित है। शोध में पाया गया कि व्याकरणिक विसंगतियाँ मुख्यतः अनुवाद, उच्चारण, वाक्य संरचना, और क्रिया रूपों के गलत प्रयोग में देखने को मिलती हैं। इस अध्ययन में 150 प्रतिभागियों के भाषण और लिखित सामग्री का विश्लेषण कर यह स्पष्ट किया गया है कि भाषा संपर्क की प्रक्रिया में व्याकरणिक शुद्धता बनाए रखने हेतु विशेष प्रशिक्षण और जागरूकता की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द: *राष्ट्र भाषा, राज्य भाषा, व्याकरण विसंगति, हिंदी, भाषा संपर्क, अनुवाद त्रुटि*

1. प्रस्तावना

भारत में भाषाई विविधता न केवल सांस्कृतिक धरोहर है बल्कि सामाजिक और प्रशासनिक ढांचे का भी महत्वपूर्ण अंग है। संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को मान्यता दी गई है, जिनमें हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। विभिन्न राज्यों में प्रचलित राज्य भाषाएँ जैसे मराठी, तमिल, बंगला, गुजराती, कन्नड़ आदि, हिंदी से भिन्न व्याकरणिक संरचनाएँ और शब्द भंडार रखती हैं। भारत में भाषाई विविधता न केवल सांस्कृतिक धरोहर है बल्कि सामाजिक और प्रशासनिक ढांचे का भी एक महत्वपूर्ण अंग

है, क्योंकि यह विविधता भारत की पहचान और एकता में अभिन्न भूमिका निभाती है (अग्रवाल, 2017)। भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है, जिनमें हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है, जबकि विभिन्न राज्यों की अपनी-अपनी राज्य भाषाएँ हैं जैसे मराठी, तमिल, बंगला, गुजराती, कन्नड़ आदि, जो हिंदी से भिन्न व्याकरणिक संरचनाएँ और शब्द भंडार रखती हैं (शर्मा, 2019)। इन भाषाओं के बीच सतत संपर्क और अनुवाद की प्रक्रिया में व्याकरणिक विसंगतियाँ उत्पन्न होना स्वाभाविक है, क्योंकि भाषाई हस्तक्षेप (language interference) के दौरान एक भाषा के व्याकरणिक नियम और संरचनाएँ दूसरी भाषा में प्रवेश कर जाती हैं (कौशल, 2021)। मराठी से प्रभावित हिंदी में "मुझे जाने का है" का प्रयोग मिलता है, जबकि मानक हिंदी में सही रूप "मुझे जाना है" है; इसी प्रकार बंगला प्रभाव के कारण "मैं कल वहाँ जाउँगा" कहा जाता है, जबकि सही प्रयोग "मैं कल वहाँ जाऊँगा" है; वहीं पंजाबी प्रभाव के चलते "मैंने खाना खा लिया है ना" जैसे वाक्य प्रचलन में आते हैं, जबकि मानक रूप "मैंने खाना खा लिया है" है (सिंह, 2018)। ऐसे भाषाई मिश्रण का अध्ययन भाषाविज्ञान के साथ-साथ समाजशास्त्र और शिक्षा के लिए भी महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यह न केवल भाषाई शुद्धता और संचार की स्पष्टता को प्रभावित करता है, बल्कि भाषाई मानकीकरण और प्रशासनिक दक्षता के लिए भी चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है (मिश्रा, 2020)। राष्ट्र भाषा और राज्य भाषा के बीच सतत संपर्क और अनुवाद की प्रक्रिया में अक्सर व्याकरणिक विसंगतियाँ उत्पन्न होती हैं।

- मराठी प्रभाव: "मुझे जाने का है" (सही: "मुझे जाना है")
- बंगला प्रभाव: "मैं कल वहाँ जाउँगा" (सही: "मैं कल वहाँ जाऊँगा")
- पंजाबी प्रभाव: "मैंने खाना खा लिया है ना" (सही: "मैंने खाना खा लिया है")

इन विसंगतियों का अध्ययन भाषाविज्ञान, समाजशास्त्र और शिक्षा के लिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह भाषाई शुद्धता, संचार की स्पष्टता, और भाषाई मानकीकरण से संबंधित है।

2. साहित्य समीक्षा

वर्मा (2016) ने अपने शोध में स्पष्ट किया कि राष्ट्र भाषा और राज्य भाषाओं के बीच संपर्क के दौरान उत्पन्न व्याकरणिक विसंगतियाँ केवल बोलचाल तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि लिखित भाषा में भी स्थायी रूप से स्थान पा लेती हैं। गुप्ता (2018) ने यह निष्कर्ष निकाला कि विद्यालयी शिक्षा में स्थानीय भाषा के अत्यधिक प्रयोग से विद्यार्थियों के हिंदी व्याकरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जिससे वे मानक हिंदी के वाक्य विन्यास और शब्दावली में बार-बार त्रुटियाँ करते हैं। सिंह (2020) ने क्षेत्रीय समाचार पत्रों के विश्लेषण में पाया कि स्थानीय भाषा की व्याकरणिक संरचनाएँ अक्सर सीधे अनुवाद होकर हिंदी समाचारों में आ जाती हैं, जिससे भाषा की शुद्धता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। तिवारी (2021) ने यह इंगित किया कि हिंदी फिल्म उद्योग और टीवी धारावाहिकों में प्रयुक्त मिश्रित भाषा (हिंग्लिश या क्षेत्रीय-हिंदी) भी जनसंचार माध्यमों के जरिए व्यापक जनमानस की व्याकरणिक आदतों को प्रभावित करती है। चौधरी (2019) के अध्ययन में यह भी उल्लेखनीय है कि सरकारी अधिसूचनाओं और अनुवादित दस्तावेज़ों में पाई जाने वाली व्याकरणिक असंगतियाँ, राज्य भाषा के सीधा प्रभाव का परिणाम होती हैं, जो समय के साथ मानक हिंदी में भी सामान्य समझी जाने लगती हैं।

इन विविध अध्ययनों से यह तथ्य स्पष्ट होता है कि राष्ट्र भाषा में व्याकरणिक विसंगतियों का कारण केवल भाषाई संपर्क नहीं है, बल्कि शिक्षा, मीडिया, प्रशासन, और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम भी इस प्रक्रिया को तेज़ी से आगे बढ़ाते हैं (वर्मा, 2016; गुप्ता, 2018; सिंह, 2020; तिवारी, 2021; चौधरी, 2019)। इस परिदृश्य में, भाषाई मानकीकरण और शुद्धता बनाए रखने के लिए एक बहुआयामी रणनीति आवश्यक है, जिसमें शैक्षणिक पाठ्यक्रम सुधार, प्रशासनिक दस्तावेज़ों की सघन समीक्षा, और मीडिया सामग्री का व्याकरणिक परीक्षण शामिल हो। साथ ही, अनुवादकों, शिक्षकों, और मीडिया कर्मियों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम विकसित किए जाने चाहिए, जिससे राष्ट्र भाषा की व्याकरणिक अखंडता सुरक्षित रह सके और भाषाई विविधता के बीच संतुलन स्थापित किया जा सके।

3. शोध कार्यप्रणाली

इस अध्ययन के लिए कुल 150 प्रतिभागियों का चयन किया गया, जिनमें प्रत्येक 5 अलग-अलग राज्यों से 30-30 लोग शामिल थे, ताकि विभिन्न भाषाई पृष्ठभूमियों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जा सके। डेटा संग्रह के लिए बहुआयामी स्रोतों का उपयोग किया गया, जिसमें व्यक्तिगत साक्षात्कार, प्रतिभागियों द्वारा लिखित निबंध और पत्र, सोशल मीडिया पोस्ट, तथा समाचार वाचन और औपचारिक भाषण की रिकॉर्डिंग शामिल थीं। संकलित डेटा का विश्लेषण दो स्तरों पर किया गया–मात्रात्मक और गुणात्मक। मात्रात्मक विश्लेषण में व्याकरणिक त्रुटियों को पाँच प्रमुख श्रेणियों–क्रिया रूप, वाक्य संरचना, कारक, लिंग-वचन, और अनुवाद त्रुटि–में वर्गीकृत किया गया, तथा उनकी आवृत्ति और प्रतिशत की गणना की गई। गुणात्मक विश्लेषण के अंतर्गत, त्रुटियों के उत्पन्न होने के प्रमुख कारणों और उनके संदर्भगत प्रभावों को समझने का प्रयास किया गया, जिससे यह पता चल सके कि विभिन्न राज्य भाषाओं के प्रभाव से हिंदी में कौन-कौन सी व्याकरणिक विसंगतियाँ पनप रही हैं और वे किस प्रकार भाषा की शुद्धता को प्रभावित कर रही हैं।

4. विश्लेषण एवं चर्चा

इस शोध के अंतर्गत संकलित डाटा के गहन विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि राष्ट्र भाषा हिंदी, जो भारत के विविध भाषाई परिवेश में एक सेतु का कार्य करती है, क्षेत्रीय भाषाओं के सतत प्रभाव के कारण अनेक प्रकार की व्याकरणिक विसंगतियों से प्रभावित हो रही है। ये विसंगतियाँ केवल मौखिक संवाद तक सीमित नहीं हैं, बल्कि लिखित भाषा, औपचारिक भाषण, समाचार वाचन, और डिजिटल संचार के विभिन्न माध्यमों में भी व्यापक रूप से दृष्टिगोचर होती हैं।

4.1 प्रमुख व्याकरणिक विसंगतियाँ

1. **क्रिया रूप में त्रुटियाँ** – इस श्रेणी में सबसे अधिक प्रचलित विसंगति क्रिया रूप के अनुचित प्रयोग से संबंधित है। उदाहरणस्वरूप, "मैं जा रहे हैं" (सही: "मैं जा रहा हूँ") जैसा प्रयोग, जो हिंदी के मानक व्याकरण में गलत है, अनेक वक्ताओं में पाया गया।

इसका मुख्य कारण यह है कि कई राज्य भाषाओं (जैसे मराठी, बंगला) में क्रिया रूप एक समान या लिंग-निरपेक्ष होते हैं, जिससे हिंदी बोलते समय वक्ता अपनी मातृभाषा के पैटर्न को अनजाने में लागू कर देते हैं।

2. **कारक चिह्नों का गलत प्रयोग** – "उसको घर में है" (सही: "वह घर में है") जैसे प्रयोग में कारक चिह्नों का अनुचित प्रयोग स्पष्ट होता है। यह त्रुटि विशेष रूप से उन वक्ताओं में पाई गई जिनकी मातृभाषा में कारक चिह्नों का प्रयोग हिंदी से भिन्न है। उदाहरण के लिए, भोजपुरी और अवधी जैसी बोलियों में 'को' और 'ने' का प्रयोग हिंदी की तुलना में अलग संदर्भों में होता है, जो मानक हिंदी के प्रयोग में बाधा डालता है।

3. **वाक्य संरचना का सीधा अनुवाद** – "मुझे खाने का है" (सही: "मुझे खाना है") जैसा वाक्य मराठी और कुछ दक्षिण भारतीय भाषाओं के प्रभाव का प्रत्यक्ष उदाहरण है। यह समस्या तब उत्पन्न होती है जब वक्ता अनुवाद की शाब्दिक पद्धति का उपयोग करता है, अर्थात स्रोत भाषा के शब्द क्रम और संरचना को यथावत हिंदी में लागू कर देता है।

4. **लिंग-वचन असंगति** – "वह आई है" को "वह आया है" कहना, विशेष रूप से पंजाबी और हरियाणवी प्रभाव वाले क्षेत्रों में सामान्य है। इन भाषाओं में लिंग चिह्नों का प्रयोग हिंदी की तुलना में कम स्पष्ट या भिन्न होता है, जिसके कारण वक्ता हिंदी में लिंग-विशेष क्रिया रूपों का सही प्रयोग नहीं कर पाते।

4.2 कारण:

इन विसंगतियों के पीछे कई समाजभाषाई और मनोभाषावैज्ञानिक कारण पाए गए:

- **भाषा संपर्क और द्विभाषिकता** – बहुभाषी वातावरण में, विशेषकर उन वक्ताओं में जो बचपन से ही दो या अधिक भाषाओं का प्रयोग करते हैं, भाषाई अंतरण (language transfer) एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। वक्ता के मस्तिष्क में एक भाषा की व्याकरणिक संरचना और नियम दूसरी भाषा पर भी प्रभाव डालते हैं, जिससे मिश्रित संरचनाएँ और त्रुटियाँ उत्पन्न होती हैं।
- **क्षेत्रीय उच्चारण आदतें** – कई भाषाओं और बोलियों में उच्चारण और स्वराघात (intonation) हिंदी से अलग होता है। यह अंतर न केवल ध्वनि स्तर पर, बल्कि शब्द क्रम और व्याकरणिक संरचना पर भी प्रभाव डालता है। उदाहरण के लिए, पंजाबी में

वाक्यों के अंत में 'ना' का जोड़ ("मैंने खाना खा लिया है ना") आम है, जो हिंदी में आवश्यक नहीं है।

- **अनुवाद की शाब्दिक पद्धति** – जब वक्ता एक भाषा से दूसरी भाषा में सोचने के बजाय सीधे शब्दशः अनुवाद करते हैं, तो लक्ष्य भाषा के नियमों का पालन नहीं हो पाता। यह विशेष रूप से तब होता है जब वक्ता हिंदी में पर्याप्त अभ्यास या संपर्क से वंचित रहते हैं और अपने भाषाई अनुभव को सीधे लागू कर देते हैं।
- **शिक्षा में व्याकरण प्रशिक्षण की कमी** – कई राज्यों में, जहाँ प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा मातृभाषा या राज्य भाषा में दी जाती है, हिंदी व्याकरण का व्यवस्थित और व्यावहारिक प्रशिक्षण नहीं मिलता। परिणामस्वरूप, विद्यार्थी बाद के जीवन में हिंदी का औपचारिक और शुद्ध प्रयोग करने में कठिनाई अनुभव करते हैं। समग्र रूप से, यह कहा जा सकता है कि राष्ट्र भाषा हिंदी में राज्य भाषाओं के प्रभाव से उत्पन्न व्याकरणिक विसंगतियाँ एक गहरी सामाजिक-भाषाई समस्या हैं। इनका समाधान केवल भाषा शिक्षण की नीतियों में सुधार, औपचारिक और अनौपचारिक माध्यमों में मानक हिंदी के प्रचार-प्रसार, और द्विभाषी शिक्षा के संतुलित मॉडल के विकास से ही संभव है।

तालिका 1: राष्ट्र भाषा हिंदी में राज्य भाषाओं के प्रभाव से उत्पन्न प्रमुख व्याकरणिक विसंगतियाँ

क्रम सं.	व्याकरणिक विसंगति	उदाहरण	कारण (प्रमुख)	आवृत्ति (N=150)	प्रतिशत (%)
1	क्रिया रूप में त्रुटि	"मैं जा रहे हैं" (सही: "मैं जा रहा हूँ")	राज्य भाषा में क्रिया का एक समान रूप	48	32.0
2	कारक चिह्नों का गलत प्रयोग	"उसको घर में है" (सही: "वह घर में है")	क्षेत्रीय भाषा में कारक प्रयोग भिन्न	35	23.3
3	वाक्य संरचना का	"मुझे खाने का है"	अनुवाद की	28	18.7

	सीधा अनुवाद	(सही: "मुझे खाना है")	शाब्दिक पद्धति		
4	लिंग-वचन असंगति	"वह आई है" को "वह आया है"	मातृभाषा में लिंग चिह्न कम स्पष्ट	22	14.7
5	अतिरिक्त शब्द/अनावश्यक अंत जोड़ना	"मैंने खाना खा लिया है ना"	क्षेत्रीय भाषाओं की आदतें (पंजाबी, भोजपुरी)	17	11.3

तालिका 1 से स्पष्ट है कि क्रिया रूप में त्रुटियाँ सबसे अधिक प्रचलित हैं, जो कुल त्रुटियों का 32% हिस्सा बनाती हैं। इसके बाद कारक चिह्नों का गलत प्रयोग (23.3%) और वाक्य संरचना का सीधा अनुवाद (18.7%) प्रमुख हैं। लिंग-वचन असंगति (14.7%) और अतिरिक्त शब्दों का प्रयोग (11.3%) अपेक्षाकृत कम लेकिन महत्वपूर्ण श्रेणियाँ हैं। ये आँकड़े इस बात की पुष्टि करते हैं कि राज्य भाषाओं के व्याकरणिक पैटर्न का राष्ट्र भाषा हिंदी पर सीधा और व्यापक प्रभाव पड़ता है।

इस शोध के परिणाम स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि राष्ट्र भाषा हिंदी और विभिन्न राज्य भाषाओं के बीच निरंतर संपर्क और परस्पर प्रभाव के कारण हिंदी में व्याकरणिक विसंगतियों का उत्पन्न होना एक स्वाभाविक और व्यापक रूप से व्याप्त प्रक्रिया है। अध्ययन में शामिल 150 प्रतिभागियों में से लगभग 82% प्रतिभागियों ने कम से कम एक बार ऐसी त्रुटि की, जो दर्शाता है कि यह समस्या केवल व्यक्तिगत भाषा दक्षता का मामला नहीं है, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषाई अंतःक्रिया का प्रत्यक्ष परिणाम है। सबसे अधिक त्रुटियाँ क्रिया रूप (जैसे "मैं जा रहे हैं" की जगह "मैं जा रहा हूँ") और वाक्य संरचना (जैसे "मुझे खाने का है" की जगह "मुझे खाना है") में देखी गईं, जो अक्सर क्षेत्रीय भाषाओं के वाक्य विन्यास और व्याकरणिक नियमों के सीधे हस्तांतरण से उत्पन्न होती हैं। यह प्रवृत्ति विशेष रूप से उन भौगोलिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में अधिक पाई गई जहाँ हिंदी मातृभाषा नहीं है और लोग दैनिक जीवन में राज्य भाषा को प्राथमिक

संचार माध्यम के रूप में प्रयोग करते हैं। साथ ही, शिक्षा व्यवस्था में हिंदी व्याकरण के मानकीकरण और सुदृढ़ प्रशिक्षण की कमी, अनुवाद के दौरान शाब्दिक पद्धति का अत्यधिक प्रयोग, तथा सामाजिक मीडिया जैसे अनौपचारिक डिजिटल माध्यमों पर भाषा प्रयोग की लापरवाही इस समस्या को और गंभीर बना रही है। इन निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि हिंदी में व्याकरणिक शुद्धता बनाए रखने के लिए एक व्यापक, बहुआयामी और नीतिगत हस्तक्षेप की आवश्यकता है, जिसमें शिक्षा, मीडिया और सामाजिक जागरूकता सभी स्तरों पर सुधारात्मक कदम उठाए जाएँ, ताकि राष्ट्र भाषा की संप्रेषणीय स्पष्टता और भाषाई मानकीकरण को दीर्घकालिक रूप से सुदृढ़ किया जा सके।

6. सुझाव

- शिक्षा में तुलनात्मक व्याकरण का समावेश
- सरकारी और शैक्षिक संस्थानों में शुद्ध हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन
- अनुवादकों और समाचार वाचकों के लिए विशेष प्रशिक्षण
- सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर शुद्ध लेखन अभियान
- भाषा सुधार के लिए इंटरैक्टिव मोबाइल ऐप और गेम विकसित करना

7. निष्कर्ष

निष्कर्षतः, राष्ट्र भाषा और राज्य भाषाओं के संबंध में उत्पन्न व्याकरणिक विसंगतियाँ भले ही एक स्वाभाविक और ऐतिहासिक रूप से विकसित होने वाली भाषाई प्रक्रिया हों, लेकिन इनके अनियंत्रित प्रसार से हिंदी की मानक संरचना और शुद्धता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। भाषाई विविधता निस्संदेह भारत की सांस्कृतिक शक्ति और पहचान का महत्वपूर्ण आधार है, किंतु प्रशासनिक, शैक्षिक, और राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावी संचार के लिए मानक हिंदी का पालन अनिवार्य है। इस शोध के परिणामों से यह भी स्पष्ट हुआ कि तुलनात्मक अध्ययन, नियमित भाषा प्रशिक्षण, और व्यापक डिजिटल जागरूकता अभियानों के माध्यम से इन विसंगतियों को उल्लेखनीय रूप से कम किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, शिक्षा पाठ्यक्रम में बहुभाषी विद्यार्थियों के लिए विशेष व्याकरण सुधार मॉड्यूल शामिल करना, मीडिया में मानक हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित

करना, तथा सरकारी और निजी संस्थानों में भाषा संपादन एवं परामर्श सेवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करना भी इस दिशा में प्रभावी कदम सिद्ध हो सकते हैं। यदि इन प्रयासों को संगठित और सतत रूप से लागू किया जाए, तो न केवल व्याकरणिक विसंगतियों में कमी आएगी, बल्कि हिंदी की संप्रेषणीय क्षमता, सांस्कृतिक शक्ति और वैश्विक पहचान भी और सुदृढ़ होगी।

संदर्भ

- अग्रवाल, आर. (2017). *राष्ट्र भाषा और क्षेत्रीय भाषाओं का पारस्परिक प्रभाव: एक भाषाई अध्ययन*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- शर्मा, पी. (2019). *द्विभाषिकता और व्याकरणिक विसंगतियाँ: सामाजिक एवं शैक्षिक दृष्टिकोण*. वाराणसी: हिंदी साहित्य भवन।
- कौशल, वी. (2021). *राज्य भाषाओं से हिंदी में अनुवाद की व्याकरणिक चुनौतियाँ*. भोपाल: मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी।
- मिश्रा, एस. (2018). "हिंदी भाषा पर भाषाई संपर्क का प्रभाव: एक तुलनात्मक विश्लेषण". *भारतीय भाषाविज्ञान पत्रिका*, 34(2), 45–58।
- वर्मा, डी. (2020). "द्विभाषिक वक्ताओं में वाक्य संरचना की त्रुटियाँ". *भाषा और समाज*, 12(1), 60–74।
- त्रिपाठी, ए. (2016). *हिंदी और मराठी के बीच व्याकरणिक अंतर: एक विश्लेषणात्मक दृष्टि*. पुणे: देccan कॉलेज पब्लिकेशन्स।
- चंद्रा, एम. (2015). "भारतीय भाषाओं के बीच पारस्परिक हस्तक्षेप और उसके प्रभाव". *सामाजिक भाषाविज्ञान समीक्षा*, 7(3), 89–102।
- जोशी, एन. (2022). *सोशल मीडिया और भाषाई शुद्धता: हिंदी पर राज्य भाषाओं का प्रभाव*. मुंबई: भारतीय जनसंचार संस्थान।
- पटेल, आर. (2019). "शिक्षा पद्धति में व्याकरण प्रशिक्षण का महत्व". *आधुनिक शिक्षा जर्नल*, 15(4), 110–125।
- सिंह, के. (2021). *भाषाई मानकीकरण और हिंदी का भविष्य*. लखनऊ: हिंदी अकादमी प्रकाशन।

- कुमार, ए. (2014). "हिंदी और बंगला के व्याकरणिक संरचना का तुलनात्मक अध्ययन". *भारतीय भाषा शोध पत्रिका*, 9(1), 33–47।
- चौहान, आर. (2017). *भाषा संपर्क और हिंदी का विकास*. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
- घोष, एस. (2020). "अनुवाद में व्याकरणिक विसंगतियाँ: एक अंतःभाषाई अध्ययन". *भाषा विज्ञान अंतरराष्ट्रीय जर्नल*, 5(2), 101–118।
- यादव, पी. (2018). *हिंदी के क्षेत्रीय रूप और उनका मानकीकरण*. दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट।
- राजपूत, डी. (2021). "डिजिटल युग में हिंदी व्याकरण की चुनौतियाँ". *ई-भाषा जर्नल*, 3(1), 55–70।